अहरौरा भंडारी देवी का मंदिर : सार्वभौमीकरण की ओर

सत्यार्थ सिंह
शोध छात्र
समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानवशास्त्र विभाग,
IGNTU.अमरकंटक, (मoप्र०)| मो०- 8604544388

शोध-सार :- इस अध्ययन से दर्शाने का प्रयास करते हैं कि स्थानीय ग्रामीण संस्कृति के केन्द्र में विद्यमान एक देवी मंदिर जोकि लोगों के विश्वास प्रणालियों में स्थित है। अपनी स्थानीय विशेषताओं के कारण चर्चित है, जो दूर-दराज के लोगों के लिये आस्था, भावना तथा आकर्षण का केन्द्र भी है। ग्रामीण संस्कृति की निरन्तरता में स्थानीय देवी-देवतओं की भूमिका को उजागर किया जा सकता है। यहां की बढ़ती हुयी लोकप्रियता, मन्नतों, मुरादों के पुरा होने का स्थान है, साथ ही विशेष भौगोलिक स्थिति, दिन-प्रतिदिन यहां भक्तों की बढ़ती हुयी भीड़, इसके विकास और विस्तार की प्रकृया को बढ़ा रही है। इस प्रकार नीतिगत दृष्टिकोण से किसी भी विकासात्मक कार्य की जड़े स्थानीय परम्परा में होनी चाहिये। लघु परम्परा के विस्तार की प्रकृया में सार्वभौमीकरण की तरफ बढ़ती स्थितियों की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है। यह लेख ग्रामीण तथा नगरीय लोगों के स्थानीय देवी के प्रति जटिल सम्बध, अतीत से वर्तमान के विस्तार दृष्टिकोण का सर्वेक्षण करता है।

बीज शब्द- ग्रामीण संस्कृति, देवी मंदिर, भक्त, आस्था, अतीत, लोकप्रियता, विकास, लघु परंपरा, सार्वभौमीकरण।

प्रस्तावना-

ग्रामीण क्षेत्र में कुछ निश्चित स्थनों को पवित्र माना जाता है, क्योंकि यहां स्थानीय स्तर के देवी-देवता होते हैं। यहां पर जाना लोगो के लिये एक धार्मिक लगाव का अनुभव होता है, जो आध्यात्मिक शक्ति मे विश्वास प्रकट करते हैं। गांवो में जमीदांरो, व्यापारियों के संरक्षण से ऐसे केन्द्र विकसित तथा विस्तारित हुये हैं। ऐसा ही एक गांव उत्तर प्रदेश के मीरजापुर जिले में (जोकि अष्टभुजा, विन्ध्याचंल, कालीखोह के पवित्र मंदिरो के लिये प्रसिध्द) स्थित है। जिला मुख्यालय से लगभग 60 किलोमीटर पूर्व की दिशा में स्थित अहरौरा कस्बा (नगर पालिका परिषद) के समीप अहरौरा खास-डीह नामक गांव जो कि दो हिस्सो में बटां है, महूली और डीह जिसका मुख्यालय संयुक्त ग्राम पंचायत महूली है। यह एरिया जो कि अहरौरा क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। विविध प्रकार की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विशेषतायें लिये हुये है। अहरौरा क्षेत्र में ग्राम खास-डीह के किनारे विन्ध्य क्षेत्र की पहाड़ी श्रृखलाओं के बीच स्थित एक मंदिर जो कि अहरौरा भण्डारी देवी का मंदिर के नाम से जाना जाता है। यह स्थान वाराणसी और सोनभद्र के बीच स्थित है जो कि सड़क मार्ग से जुड़ा है। अहरौरा इस क्षेत्र में व्यापार का ऐतिहासिक केन्द्र रहा है। ऐसा स्थल जहां पर पहले लोग दक्षिणांचल से जंगल, पहाड़, घाटियां पार करते हुये व्यापार, लेनदेन, सामानों की बिक्री के लिये यहां आते थे। अहरौरा का यह क्षेत्र कृषि, खनियां, खदानों के साथ-साथ वन उत्पाद जैसे- लकड़ी के खिलौने, खैर, बीटल, पान बनाने में प्रयुक्त कत्था, तेदं-पत्ता बीड़ी-सिगरेट तैयार करने मे प्रयुक्त, पेड़-किशमिश, खाद्यान, शब्जियों के लिये प्रसिध्द है। मंदिर की पहाड़ी के चारो तरफ खेतों की क्यारियां, गांव तथा विन्ध्य क्षेत्र की पहाड़ी श्रृंखलायें दिखती है। यहां आस-पास के जंगलो में कई मुल्यवान औषधि व जड़ी-बुटियां पायी जाती हैं। यहां के ग्रामीण क्षेत्र का मुख्य व्यवसाय कृषि हैI इसके अतिरिक्त यहां मंदिर के आस-पास लगने वाले मेलों में लोग अपनी छोटी-मोटी दकानें भी लगाते हैं। यहां की जनसंख्या लगभग 3158 है (जनगणना 2011), यहां की मुख्य जातियां मौर्या, ब्राम्हण, यादव, मुस्लिम, हरिजन, धोबी, विश्वकर्मा प्रमुख है। गांव मे एक प्राथमिक विद्यालय तथा एक जुनियर हाई स्कूल स्थित है।

अहरौरा का पुराना नाम अहिरौरा अर्थात अहिरो या यादवो का क्षेत्र है, कालान्तर मे सरल बोलचाल की दृष्टि से अहरौरा कहा जाने लगा। यहां आस-पास के क्षेत्रों में कई ऐतिहासिक किले तथा दुर्ग मौजुद हैं, रामनगर का किला (वाराणसी), चुनारगढ़ का किला(मीरजापुर), नौगढ़ और विजयगढ़ का किला स्थित है। यहां से 25 किमी0 उत्तर दिशा मे रामनगर का किला स्थित है, यह किला वाराणसी के राजा चेत सिंह के वंशजो का है। राजा चेतसिंह का एक किला अहरौरा में खण्डहर के रूप में मौजूद है। अनुश्रुतियों के अनुसार जब राजा का यहां आगमन होता था, तब वह अपने सैनिकों के साथ भण्डारी देवी मंदिर जाया करते थे। यहां के क्षेत्र मे नौगढ़(चंदौली), विजयगढ़ (सोनभद्र) और चुनारगढ़(मीरजापुर जिला) के राजाओं के बीच हुयी दष्मनी तथा प्रेम के सम्बन्धो पर उपन्यास आधारित कहानी चन्द्रकान्ता संतति बहुत लोकप्रय रही(ख़त्रीः1818)। वर्तमान मंदिर से लगभग 200 गज की दूरी पर उत्तर की दिशा में सम्राट अशोक का उत्तर प्रदेश में प्रथम लघु शिलालेख जो पाली भाषा में है, का उल्लेख पुरातात्विक, ऐतिहासिक लेखों में किया गया है। इस स्थान को प्राचीन भण्डारी देवी मंदिर के बगल में चिन्हित गया है, अहरौरा का यह क्षेत्र उपजाऊ भूमि व पुराने व्यापर स्थल के रूप में जाना जाता है (सरकार,स्वामीः1965:341)। यहां बौध्दिष्ट लोगों का आना-जाना लगा रहता है। यहां के बौध्दिष्ट लोगों के अनुसार यह जो वर्तमान भण्डारी देवी है, वह पहले कभी सम्राट हर्षवर्धन की बड़ी बहन राज्यश्री थी, जिसका उल्लेख इतिहास में है, जो अपने पति गृहवर्मन की मृत्यु के पश्चात् विन्ध्य क्षेत्र में आयी

और रहने लगी, उसने बौद्ध धर्म को अपना लिया था (श्रीवास्तवः2015-16:476)। अपने परोपकार के कार्यो के कारण देवी कहलाने लगी, कोई ठोस सबुत न होने की वजह से स्थिति स्पष्ट नहीं है।

वर्तमान भण्डारी देवी मंदिर जिनके ईतिहास के बारे में यहां के लोगों में एक प्रचलित लोककथा है, जोकि पिढ़ी-दर-पिढ़ी चली आ रही है कि वर्तमान भण्डारी देवी मंदिर जिस पहाड़ी पर स्थित है, वहां पहले कभी एक भाण्डोदरी नाम का दानव रहता था जोकि अपनी क्रुरता, हिंसक प्रवृत्ति के लिये प्रसिध्द था। मंदिर लगभग 7-8 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व दिशा में राजा कर्णपाल सिंह उर्फ राजाबाबा का शासन था, जो अब एक पहाड़ी पर खण्डहर के रूप में मौजूद है। इस स्थान को राजाबाबा की पहाड़ी भी कहते हैं, अपनी न्यायपृयता के लिये प्रसिध्द थे। उस भाण्डोदरी नामक दानव के अत्याचार से तंग आकर राजा कर्णपाल ने उससे युध्द किया और वह राजा युध्द मे वीरगति को प्राप्त हुये। इसके बाद राजाकर्ण पाल की बड़ी बहन के साथ उस दैत्य का युध्द हुआ और वह दानव भाण्डोदरी मारा गया। लोगों की मान्यताओं के अनुसार भाण्डोदरी नाम के कारण ही उनका नाम भण्डारी देवी पड़ा, वह देवी उस पहाड़ी पर रहने लगीं और उन्होने गरीब जरूरतमंद लोगों के लिये अन्न व भण्डारे का आयोजन करने लगीं। जिससे लोग उन्हें देवी के रूप में मानने लगें। उनकी मृत्यु के बाद पहाड़ी पर एक छोटे समाधिस्थल का निर्माण किया गया। मान्यताओं के अनुसार कई वर्ष बीत गये उस स्थान के आस-पास कटीली झाड़ियों से घिर जाने के कारण, पहाड़ी पर जाने के लिये ठीक से रास्ते का न होनें के कारण तथा जंगली जानवर रहने के कारण लोगों का आना-जाना बहुत कम हो गया। समय व्यतीत होते गये धीरे-धीरे यहां चरवाहों का आना-जाना शुरू हो गया, पहाड़ी पर जाने-जाने से पगडंडियों का निर्माण होने लगा व स्थानीय लोगों की चहलकदमी बढ़ने लगी।

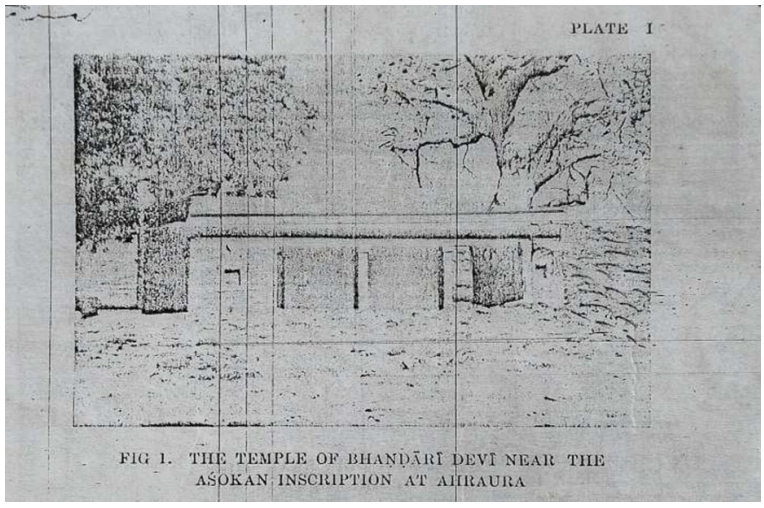

चित्र संख्या 1- अहरौरा भण्डारी देवी मंदिर का पुराना फाईल फोटो।

सैध्दांतिक परिप्रेक्ष्य-

धार्मिकता की इच्छा ने लोगों को इस ओर आकर्षित किया यहां के पुराने विश्वासों, मान्यताओं ने अपना पैर जमाना शुरू किया। एक गांव में स्थानीय स्तर के मंदिर में लघु परम्परा के तत्व हो सकते हैं जैसा कि रेडफिल्ड ने लिखा है कि, सांस्कृतिक अथवा धार्मिक जीवन से सम्बन्धित यदि किसी परम्परा का मूल धर्मग्रन्थो से कोई सम्बन्ध न हो वह परम्परा छोटे से केन्द्र में प्रचलित हो, तथा अधिकांश व्यक्ति उसके वास्त्विक अर्थ को न समझते हो तब ऐसी परम्परा को लघु परम्परा कहते है (रेडफिल्डः1956:70)।

समय के बदलते आयामों ने यहां की स्थानीय लोकमान्यतओं, लोगों के मनोकामनाओं के पुरा होने के स्थान, तीज-त्योहारों पर विशेष स्थिति, सांस्कृतिक प्रदर्शनों व यहां देवी के प्रति महिलाओं के विशेष श्रध्दा ने लोगों को तेजी से आकर्षित किया। जब लघु परम्परा के तत्व देवी-देवता, रीति-रिवाज, प्रथायें, कर्मकाण्ड, विश्वास, संस्कार उपर की ओर बढ़ते हैं अर्थात् उनके फैलाव का क्षेत्र विस्तृत हो जाता है, जब वे वृहद परम्परा के स्तर तक पहुच जाते हैं और उनका मूल स्वरूप परिवर्तित होने लगता है, तो इस प्रकृया को सार्वभौमीकरण कहते हैं (मैरियटः1955:212)। सार्वभौमीकरण की इस प्रकृया का विकास लघु और वृहद परम्पराओं के पारस्परिक सम्बन्धो से होता है। सार्वभौमीकरण में लघु परम्परा का अस्तित्व समाप्त नहीं होता, बल्कि अपने अस्तित्व को बनाये रखते हुये वे नवीन परम्परा का निर्माण करती हैं। वृहद परम्परायें पुर्णतया नवीन नहीं होती बल्कि वास्तव में लघु परम्पराओं का ही संशोधित रूप होती हैं। सार्वभौमीकरण की प्रकृया में स्थानीय धार्मिक विश्वास व्यापक स्तर पर फैलते हैं।

मैकिम मेरियट ने उत्तर भारत के एक गांव किशनगढ़ी का अध्ययन किया। उन्होने किशनगढ़ गांव में लघु परम्परा, वृहद परम्परा के तत्वों को वहां के समाज में समाहित देखा, दोनों के मध्य निरन्तर अर्न्तक्रियायें होती हैं। उन्होंने एक उदाहरण के माध्यम से इसे समझाया। किशनगढ़ गांव में दिपावली के त्योहार के अवसर पर यहां के ग्रामीण लोग घर की दीवाल पर चावल के आटे से एक देवी की प्रतिमा बनाते हैं, जिसे उन्होने सौरती कहा, इसे देवी लक्ष्मी का रूप माना जाता है जिसकी पूजा दीवाली पर लोग अवश्य करते हैं। यहां के लोग यह मानते हैं कि लक्ष्मी धनवानों की देवी है, और सौरती उनकी देवी अर्थात् गरीबों की देवी है। मैरियट के अनुसार सौरती का लक्ष्मी के रूप में पूजन सार्वभौमीकरण है (मैरियटः1955:202)। कमोबेश यह स्थिति अहरौरा भण्डारी देवी मंदिर की भी है, कभी अन्न, धन-धान्य का भण्डार चलाने के कारण लोग इन्हे अन्नपूर्णा देवी का रूप मानते हैं, जो कि मॉ जगदम्बा का रूप है। जिनका उल्लेख वृहद परम्परा जैसे शास्त्रो, लिखित ग्रंथो में है, जिन्हे अन्न या अनाज की देवी के रूप में माना जाता है (दासः1941:281)। माता भण्डारी देवीं की लोकपृयता, यहां

की रीति रीवाज, स्थानीय विश्वास, दिन-प्रतिदिन गांवो से बाजारों, शहरों की ओर बढ़ रही है। यहां लघु परम्परा के तत्वो का विस्तार हो रहा है। योगेन्द्र सिंह कहते है कि, जब छोटी परम्परा महान परम्परा की ओर बढ़ती है, तो यह सार्वभौमीकरण की प्रकृया है (दोषी:2015:96)|

साहित्य समीक्षा-

क्रिस्टी(2016)- ने शिकोकु तीर्थयात्री द्वीप की परिक्रमा, बौद्ध मंदिर ओकुओ जी, जिसे मंदिर88 माना जाता है। जो फूलो के चेरी ब्लासम, वाईल्ड फ्लवार खेतो के बीच मार्ग से जाता है। एक पहाड़ी मंदिर पर अपने तीर्थयात्रा द्वारा किये गये अनुभव को साझा किया है। यह अध्ययन वर्तमान अध्ययन की भौगोलिक विशेषताओं से मिलती है जैसे पहाड़ी पर मंदिर का स्थित होना, लोगों द्वारा कठिन प्रयत्नो के बाद वहां पहुचना, आध्यात्मिक शक्ति, भावनात्मक लगाव आदि का आभास कराता है। इसलिये यह अध्ययन वर्तमान पहाड़ी मंदिर की स्थिति समझने में सहयोग करता है।

पाण्डे(2013) ने देहरादून जिले के सहारनपुर ब्लाक के एक करबरी नामक गांव का अध्ययन किया। गांव तीनो ओर से जंगलो से घिरा हुआ है। करबरी गांव के पवित्र परिसर को तीन डिविजनों मे विभाजित किया गया, संसारी देवी उर्फ माता, माणक सिद्ध बाबा मंदिर और बारह भगवान मंदिर। संसारी देवी के उत्सव की प्रकृया बहुत जटिल है जिसकी शुरूआत पालकी निर्माण से होती है। पवित्र विशेषज्ञ(जो अविवाहित रहते है) द्वारा पवित्र प्रदर्शनों के साथ यहां संसारी देवी की पूजा की जाती है, जो लगभग दिन भर चलती है। यह महामारियों को दूर करने व समाज कल्याण के लिये मनाया जाता है। इस प्रकार लेखक कहता है कि, धार्मिक विश्वास प्रणाली मे परिवर्तन एक सतत् प्रकृया है, शास्त्रीय परम्परायें स्थानीय परम्पराओं से जुड़ने लगी है। यह अध्ययन वर्तमान अध्ययन की विशेषताओं से मिलती-जुलती है, जिसमें कि स्थानीय परम्परायें शास्त्रीय परम्पराओं से जुड़ रही हैं।

जेन(2013) ने धार्मिक पर्यटन पर ध्यान केन्द्रित किया है। ऐसे व्यक्ति जो अवकाश मिशनरी, तथा तीर्थयात्रा के लिये अकेले या समूह के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जाते है, उन्हे धार्मिक पर्यटन करने के लिये कहा जा सकता है। मलेशिया विकसित देशो मे से एक है। मलेशियाई सरकार यहां धार्मिक पर्यटन को बढावा दे रही है आम तौर पर दक्षिण-पुर्व ऐशियाई देशो में कुछ लोग बौद्ध धर्म का पालन कर रहे हैं। इस अध्ययन ने धार्मिक पर्यटन पर ध्यान केन्द्रीत किया जो कि घुमने फिरने, मनोरंजन के साथ साथ आध्यात्म को भी आत्मसात करता है। यह अध्ययन वर्तमान अध्ययन की परिस्थितियों में लागू होता है।

पैत्रिसिया(2011) ने गुवहाटी असम में कामरूप मंदिर का केस स्टडी किया। कामरूप मंदिर हिन्दू देवी, शाक्त परम्परा में सबसे व्यापक रूप से ज्ञात तीर्थ स्थलो मे से एक है। इसे देवी के आसनो के रूप मे वर्णित किया जाता है। लेखक कहता है कि यहां धर्म को स्थानीय जरूरतों के अनुकूल बनाने, और स्थानीय धार्मिक विवाद को सम्बोधित करने के लिये छोटी और महान परम्परा दोनो ऐसी प्रकृया में सकृय भीगीदार है। यह समकालीन परम्परा, स्थानीय और आक्रामक हिन्दू के साथ जोड़ती है। इस अध्ययन से देवी मंदिर में विभिन्न प्रकार के प्रदर्शनो, कर्मकाण्डो, रीति-रिवाजो, लघु और महान परम्पराओं की सक्रीय भागीदारी, आदि के बारे मे जानकारी मिलती है।

विद्यार्थी(1979) ने उत्तर प्रदेष के धार्मिक नगरी काशी के पवित्र परिसर का अध्ययन किया है। धार्मिक संकुल के माध्यम से एल.पी.विद्यार्थी ने वहां के धार्मिक भौगोलिक स्थिति, धार्मिक प्रदर्शन, धार्मिक विषेशज्ञ व उनकी जीवन शैली का वर्णन किया। साथ ही वहां लगने वाले मेंलो, पर्वो,त्योहारों व् पवित्र स्थानों का विवरण दिया। विद्यार्थी ने अध्ययन में बताया कि पवित्र परिसार में एकजुटता के तत्व, सांस्कृतिक एकीकरण के भारतीय तरीको मे सेफ्टी पिन के रूप मे कार्य करते हैं। तीर्थ उद्योग के कारण काशी की अधिकांश धर्मनिरपेक्ष कलायें और शिल्प विकसित हुये हैं। यह अध्ययन हमे धार्मिक प्रदर्शनो, धार्मिक पुजारियों, धार्मिक भूगोल, मेलों, पर्वो के वर्णन से वर्तमान अध्ययन क्षेत्र का अध्येयन, वर्णन करने में सहायता करता है।

शोध उद्देश्य-

वर्तमान भण्डारी देवी मंदिर जो कि विन्ध्य क्षेत्र की पहाड़ी पर स्थित है, के धार्मिक परिसर को समझने के लिये, तथा सांस्कृतिक विस्तार की प्रकृया में सार्वभौमीकरण की तरफ हो रहे परिवर्तन की व्याख्या करने के लिये यह शोध आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्र में स्थित मंदिर में लघु परम्परा के तत्वों पर महान परम्परा के प्रभावो का वर्णन करने के लिये, यहां पर होने वाले सांस्कृतिक प्रदर्शनों तथा यहां मंदिर के इतिहास को जानना इस अध्ययन का उद्देश्य है। विभिन्न चरणो में हुये विकास तथा आधुनिकता को समझना इस अध्ययन का उद्देश्य है। यहां आधुनिकता से हुये परिवर्तनों के फलस्वरूप यहां के स्थानीय कला, संस्कृति में हुये बदलाव की चर्चा की गयी है।

शोधविधि-

वर्तमान अध्ययन के लिये नृजातीय, गुणात्मक तकनीकों का उपयोग करके विभिन्न चरणो में मंदिर तथा यहां आने वाले लोगो से साक्षात्कार-अनुसूची से, फिल्ड वर्क के जरीये प्राथमिक डाटा एकत्र किया गया है। प्रतिभागी अवलोकन करके यहां पर होने वाले धार्मिक कार्यो के बारे में जाना गया। धार्मिक स्थल के बारे में लोगो की धारणा को समझने के लिये गांव में साक्षात्कार के माध्यम से बूढ़े-बुजुर्ग लोगों से बातचीत की गयी, और यहां पर मंदिर के बारे में यहां की स्थानीय मान्यताओं को जाना गया। द्वितियक श्रोतो से जानकारी के लिये यहां अहरौरा क्षेत्र के बारे में लिखे गये कुछ पत्रिकाओं,

पुस्तकों, समाचार-पत्रों व इण्टरनेट का सहारा लिया गया।

सांस्कृतिक प्रदर्शन -वर्तमान भण्डारी देवी मंदिर से हर तीसरे वर्ष सावन के दूसरे मंगलवार को माता का "मनौना"(माता को मायके से मनाकर वर्तमान मंदिर लाने के लिये) कार्यक्रम बड़े स्तर पर आयोजित होता है, आस-पास क्षेत्र के 10-15 गांवो तथा बगल में स्थित अहरौरा बाजार के लोग इसमें शामिल रहते हैं। वर्तमान भण्डारी देवी मंदिर से लोगों द्वारा एक विशेष प्रकार के व्यवस्था की तैयारी की जाती है, जिसमे एक डोली या पालकी जो कि लकड़ी तथा बम्बू जिसे स्थानीय भाषा में बांस कहते हैं की बनी होती है, जिसे लाल, चमकीले रंग के कपड़े से सजाया जाता है। डोली को लाने ले जाने के लिये कहारों को बुलाया जाता है। डोली के अन्दर एक लाल रंग की चुनरी, कुछ श्रृंगार के सामान, पांच अछत चावल, पूजा की सामग्री जैसे नारियल, धूप, दसांग, की सामग्री होती है, पांच प्रकार के बाजें, नगाड़ा, शहनाई, ढोलक, हरमुनियां, बैंजो वालों को बुलाया जाता है। जय माता दी के नारे लगाते हुये लोग वर्तमान मंदिर से पैदल ही 7-8 किलामीटर दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित शियूर हनुमान मंदिर के बगल में, राजा कर्णपाल सिंह उर्फ राजा बाबा की पहाड़ी पर जाते हैं (जहां माता का मायका है)। जिसमें बड़ी संख्या में गांव की महिलायें भी शामिल रहती हैं। साथ में गांव के दर्शनियां(जिनके सिरे माता आती हैं) भी रहते हैं। पहाड़ी पर जाने के बाद डोली मे रखे सामग्री जैसे चुनरी, पांच अछत चावल, नारियल, धूप, अगरबत्ती को खण्डहर महल के एक छोटे से मकान में बने ताख पर रखते हैं। गांव के दर्शनियां द्वारा हवन सामग्री लेकर पूजा की प्रकृया सम्पन्न की जाती है। माता को मायके से चलने के लिये मनाया जाता है, माता दर्शनियां के सिरे आती है और ले जाने के लिये कहती हैं, दर्शनियां बोलते हैं हमे यहां से ले चलो, ताख या आलमारी पर रखी सामग्री की उठाकर डोली में रख दी जाती है। कहार डोली को लेकर, जयकारे लगाते हुये पैदल चल देतें है, कहारों के अनुसार डोली का भार एक आदमी के भार के बराबर बढ़ जाता है।

माता के मायका से वर्तमान मंदिर लौटते समय लोग रास्ते में पड़ने वाले गांवो की सीमा पर ठहरते हैं, महिलायें जल का धार देती हैं, रास्ते पर पड़ने गांव के लोग हवन करते हैं, प्रसाद व नास्ते का वितरण होता है। पैदल ही चलते हुये लोग शाम को वर्तमान भण्डारी देवी मंदिर पहुचंते हैं। यहां माता के डोली को मंदिर के सामने रखा जाता है, और डोली मे रखी सामग्री को उठाकर माता के मंदिर में रख दी जाती है, ऐसा माना जाता है कि माता का वर्तमान मंदिर में निवास हो गया है। यह सब करने के पिछे लोगों की मान्यता है कि वर्षा अच्छी होती है, जिससे पैदावार में बढ़ोत्तरी होती है, स्थानीय लोगों के जीवन में तमाम प्रकार की समस्याओं से समाधान मिलता है। मनौना कार्यक्रम संपन्न होने बाद यहां मंदिर के पहाड़ी व उसके नीचे वृहद मेला लगता है, दो वर्ष मेला लगाने के बाद तीसरे वर्ष यह प्रक्रिया फिर से अपनाई जाती है।

लाखों की संख्या में लोग आते हैं, जमीन से लेकर पहाड़ी तक लोगो की भारी भीड़ लगती है। मंदिर में लोग माता के लिये विशेष रूप से चुनरी, नारियल, लाचिदाना, सिन्दूर व माता को पसंद लाल पेंडा चढ़ाते हैं। जबकि मंदिर के बगल में पानी के कुण्ड में विराजमान कमल के फूल के उपर शिवजी की ध्यान मुद्रा में बनी आदमकद प्रतिमा के नीचे फूल पर लोग व महिलायें सिक्के फेकते है, ऐसा इसलिये कि यह करना शुभ होता है व उन्हे शिव जी आशिर्वाद प्राप्त होता है। शिवकुण्ड के किनारे पर लगी जालीनुमा घेराव में महिलायें, बच्चें तथा भक्त लोग अपनी मुरादों के लिए चुनरी बाधंते हैं। मंदिर में पूजा अर्चना के बाद लोग मंदिर के सात बार परिक्रमा करते हैं व मंदिर के पिछे बने ताख, आलमारी पर पांच कंकर अर्थात् पत्थर के पांच छोटे टुकडों का रखते हैं, और अपनी माता से इच्छाओं , कामनाओं के पुरा होने के बाद उसे वहां से हटा देते हैं। ऐसा सभी लोग नहीं करते केवल वही लोग तथा महिलायें जिन्हें कोई विशेष समस्या रहती है। मंदिर के ठीक पीछे एक गुफा है, लोग ऐसा बताते है कि कभी माता का वह निवास स्थान था, वह वहां से भण्डारे का आयोजन करती थीं। मंदिर आने के बाद महिलायें यहां जाती हैं और फूल, चावल, चुनरी,सिंदूर चढ़ाती हैं। आस-पास के गांव तथा बाजार मे विवाह के बाद नव- दम्पत्ति, पहाड़ी के दक्षिण दिशा में कुछ दूरी पर जिसे मदरापर बोलते है, जहां एक चबुतरा और एक बेल का वृक्ष है, घर के महिलाओं के साथ आते हैं और (बनवार) शादी में प्रयुक्त सामान जैसे, मिट्टी के कलश, प्याली, हल्दी, धागे के कंगन, आम के पत्ते, चावल के दाने आदि यहां रखते हैं और माता का दर्शन और आशीर्वाद लेने जाते हैं। ऐसा इसलिये कि नव दम्पत्ति सुखी जीवन व्यतीत करे और दोनों की जोड़ी सदा बनी रहे।

वर्तमान मंदिर के आस-पास के ग्रामीण निवासी अपनी पहली फसल तैयार होने के बाद कुछ अंश माता को चढ़ाने आते हैं। कुछ महिलायें पुत्र प्राप्ति की इच्छा से या अन्य मनोकामना लेकर यहां आती हैं, साथ ही घर से आटा, देशी घी, चीनी लेकर यहां हलवा और पूड़ी माता को चढ़ाती हैं, जो कि माता को बहुत पसंद है। कई महिलायें मिलकर माता के गीत भी गाती हैं। पुत्र प्राप्ति के उपरान्त बालक के अच्छे भविष्य के लिये पूजन व मुण्डन संस्कार का आयोजन भी किया जाता है। जिनकी मनोकामना पुरी हुयी उनमे से कुछ लोग सावन में भण्डारे (पुड़ी,शब्जी,हलवा) का आयोजन करते हैं। नवरात्र मे यहां विशेष सजावटे, भक्ति-संगीत कार्यक्रम का आयोजन होता है, जाने-माने गायक यहां आते हैं। यहां स्थानीय गायकों द्वारा कजली,बीरहा का आयोजन भी किया जाता है जोकि पूर्वांचल क्षेत्र का लोकसंगीत भी है। यहां गांव, नगर के कुछ महत्वपुर्ण बैठकों का आयोजन भी किया जाता है। यहां सावन के साथ साथ अन्य त्योहारो, सामान्य दिनों में भी लोगो का आना-जाना लगा रहता है।

मंदिर में प्रत्येक दिन सुबह-शाम होने वाले कीर्तन (त्वमेव् माता च पिता त्वमेंव्....)यहां के धार्मिक विशेषज्ञ द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं, ढोलक, तबला बजाने वाले अलग से रहते हैं। यहां आरती का समय सुबह 7 बजे, गर्मी के मौसम में 6 बजे कपाट खुलने के कुछ देर बाद, शाम को आरती कपाट बन्द होने के कुछ देर पहले होता है, तत्पश्चात् पुजारी द्वारा ही प्रसाद के रूप में लाचीदाना, चरणामृत दिए जाते हैं व तिलक लगाये जाते हैं।

चित्र संख्या 2 -मंदिर के ठीक बगल मे बने शिव कुण्ड में सिक्के फेकते भक्त तथा बच्चे।

विकास, विस्तार व आधुनिकीकरण का प्रभाव-

सामान्यतया हिन्दू धर्म को आधुनीकिकरण व विकास मे बाधक माना जाता है, क्योंकि विज्ञान तकनीकि के विचारो से इसका विरोध है, इस प्रकार के विचार मैक्स वेबर के हैं। किन्तु तथ्यात्मक आकड़ो से इस प्रकार के सिध्दांत की पुष्टि नहीं होती। श्री योगेन्द्र सिंह के अनुसार, यद्यपि भारतीय परिप्रेक्ष्य मे आधुनिकीकरण के सम्बन्ध में धर्म की भूमिका के स्पष्टीकरण अथवा अभिव्यक्ति में अनेक अवधारणात्मक, अनुभवात्मक कठिनाईयां हैं, तथापि इसका समय की आवश्यकताओं के अनुसार आधुनिकीकरण तथा रूपान्तरण सदैव होता रहा है (तिवारी:2008:67)। वर्तमान अहरौरा भण्डारी देवी मंदिर जो कि हिन्दू धर्म की विशेषताओं को लिये हुये है। राज्य सरकार द्वारा चिन्हित एक धार्मिक स्थल है व पर्यटन विकास बोर्ड लगा हुआ है। यहां सन् 1998 के पहले की स्थितियां कुछ ऐसी थी कि, पुजारी तथा आसपास के लोग बताते हैं कि दिन के 11 बजे यहां मंदिर के कपाट बन्द करके पुजारी अपने घर चले जाते थे। लोग यहां अकेले जाने से डरते थे। लोगों के यहाँ आने-जाने की संख्या बहुत ही कम थी। पहाड़ी पर रास्ते तथा पहाड़ी के नीचे सड़क न होन से व पहाड़ी पर जंगली जानवरों के रहने से लोग यहां अकेले जाने से कतराते थे। महिलाओं और बच्चो को यहां मंदिर पर पहुचने मे बहुत कठिनाईयों का सामना करना पडता था। माता के मनौना कार्यक्रम मे 100 से 200 लोग ही माता के मायके, माता को लाने जा पाते थे। सावन के मेले में यहां कुछ आसपास के गांव के लोग ही पहुंच पाते थे, छोटी-मोटी स्थानीय दुकाने ही लग पाती थीं। स्थानीय कलाकारी की वस्तुयें ज्यादा रहती थीं, जैसे आदिवासियों द्वारा निर्मित बांस के बने सामान जैसे- टोकरी, सूप- दौरी, खिलौने, मिट्टी के बर्तन तथा खिलौने, लकड़ी के खिलौने, चीनी-मिट्टी के बर्तन आदि जो वर्तमान मे पतन की तरफ बढ़ रहे हैं।

यहां विकास की प्रकृया ऐसे शुरू होती है कि गांव के ब्राम्हण जमींदार रमेश पाण्डेय के अनुसार, सन् 1999 के आस-पास वर्तमान भण्डारी देवी माता रात में उनके स्वप्न में आयी, और ब्राम्हण से बोली कि मेरे निवास स्थान पर ठीक से व्यवस्थायें करवाओं, यहां लोगों के आने के लिये ठीक से रास्ते नहीं है, मंदिर परिसर मे लोगो के विश्राम तथा रूकने के लिये स्थान नहीं है, पीने के लिये पानी तथा बिजली की व्यवस्था नहीं है, अतः तुम इस जिम्मेदारी को निभाओं। ब्राम्हण ने देवी को वचन दिया कि मैं इस जिम्मेदारी को निभाउंगा। उन्होने लोगों से चंदे मांगे, पूंजीपतियों के यहां गये उनसे सहयोग मांगा, कुछ विधायक, सांसद से भी मिले और उनसे सहयोग मांगा। मंदिर आस पास निर्माण व्यवस्थायें शुरू की गयी। मंदिर परिसर मे चबूतरे बनाये गये, धर्मशालाओं का निर्माण किया गया, बिजली, चबुतरों पर चौका, टाईल्स व भक्तों को सुचारू रूप से दर्शन के लिये, महिला-पुरूष के लिये अलग अलग रेलिंग की व्यवस्थायें की गयी। माई की बगिया का निर्माण किया गया। मंदिर परिसर में प्रवेश करने वाले मार्ग पर दो गेट आगे व एक गेट पिछे, का निर्माण किया गया। चबुतरे के चारो तरफ जालीनुमा मोटे तार से घेराव किया गया, जिससे पहाड़ी से कोई नीचे न गिर जाय। उत्तम जल व्यवस्था के लिये दो बड़ी टंकियो का निर्माण किया गया। हवन के लिये हवन कुण्ड बनाये गये। मंदिर व बरामदे के आकार को बड़ा किया गया। रात मे विश्राम करने ठहरने की व्यवस्थायें की गयीं। मंदिर के पिछे से रास्ते का निर्माण, पहाडी के रास्ते पर छोटे-छोटे कुर्सीनुमा चबुतरे का बनवाना जिससे पहाड़ी पर चढ़ते समय बूढ़े- बुजूर्ग, महिलायें यहां आराम कर सकें। लोगों के आवश्यकताओं के हिसाब से 10 से 12 दुकाननुमा भवनों व भजन, भक्ति संगीत गायक जो बाहर से आते हैं उनके लिए चबुतरे का निर्माण किया गया, मिष्ठान व प्रसाद के लिये अलग से दुकान की व्यवस्था की गयी। पहाड़ी के नीचे सांसद, विधायको के प्रयास से सड़क का निर्माण व मरम्मत का कार्य किया गया।

गांव से शहरों तक के लोग बड़ी संख्या में यहां आने लगें। पहले जहां मनौना अनुष्ठान में केवल दो से तीन सौ लोग ही जा पाते थे, अब उनकी संख्या 50 से 60 हजार तक पहुंच गयी है। यहां सावन के महीने में लगने वाले मेलों में पहले जहां 25 से 30 दुकाने ही लग पाती थीं, अब इनकी संख्या पहुंच कर हजारो हो गयी है। आस-पास के जिलो से लोग आते हैं

और यहां डेरा डाल कर अपना व्यवसाय, दकान, टेंट, तम्बुओं में लगाते हैं, दुकान वाले स्थान के किराये ग्राम पंचायत व मंदिर विकास समिति के लोगों को दिये जाते हैं। यहां की दकानों में जलेबी व बच्चों के खिलौनो की दुकान प्रसिध्द है। यहाँ आस-पास के लोगों की भी दकानें लगती हैं जो यहाँ के लोगों के आय व रोजगार के साधन भी है।

अहरौरा भण्डारी देवी मंदिर पर सामान्य दिनो में लोगों का आना-हांलाकि अहरौरा क्षेत्र के तथा बाहरी लोग जो हिन्दू हैं, विभिन्न देवी, देवताओं में आस्था के साथ ऐसी देवी के प्रति आस्था व विश्वास दिखाते हैं, जो कि स्थानीय स्तर पर मौजूद है, और अधिकांश ऐसे लोगों का यहां आना-जाना लगा रहता है।

विवरण	परिवार के साथ	दोस्तों के साथ	रिश्तेदारो का साथ	अकेलेs	कुल
दर्शन पूजन के उद्देश्य से	42 91.4%	28 84.84 %	15 93.75%	5 71.43%	90
पर्यटन के उद्देश्य से	2 4.35%	5 15.16 %	1 6.5%	2 28.57%	10

यहां आने वालो मे 46 परिवारों मे से 91.4% दर्शन, पूजन, मन्नत के आधार पर आस्था थी, और 4.3% लोग परिवार के साथ घुमने फिरने के उद्देश्य से यहां आस पास घुमने आते हैं। वहीं दोस्तो के साथ आने वालो मे 84.84% लोग आस्था व विश्वास के साथ लोग यहां आते, तथा 15% लोग बिना आस्था विश्वास के यहां आते। रिश्तेदारो के साथ यहां आने वालो में 93.75% लोग आस्था विश्वास के साथ जबकि 6.5% लोग यहां घुमने फिरने आते। यहां अकेले आने वाले लोगों में 71.43% लोग दर्शन पूजन और 28.57% लोग घुमने-फिरने आते हैं। कुल मिलाकर दर्शन, पूजन, आस्था विश्वास को लेकर यहां 90% लोग आते हैं, जबकि 10% लोग घुमने फिरने, पर्यटन के उद्देश्य से यहां आते हैं।

निष्कर्ष-

धार्मिक स्थान पर आधुनिकता विकास का एक प्रमुख कारण तो है ही, साथ ही इसके कुछ दुष्परिणाम भी हैं, जैसे मंदिर के आस-पास लगने वाले मेलें में स्थानीय कलाकारों द्वारा बनायी गयीं वस्तुयें, मंदिर पर लोगों तथा महिलाओं द्वारा गायी जाने वाली स्थानीय लोकगीत अब पतन के कगार पर हैं। बाहरी लोगों द्वारा बड़ी संख्या में यहां व्यापर के लिये आना यहां के स्थानीय लोगो के लिये प्रतियोगिता पैदा कर दिया है। यहां मनौना कार्यक्रम इसलिये मनाया जाता है कि वर्षा अच्छी हो, फसलों का उत्पादन अधिक हो, जिससे यहां के लोग खुशहाल रहें। इसी कारण से इन्हें लोंग माँ अन्नपूर्णा का रूप भी मानते हैं, जिनका उल्लेख वृहद परम्परा के ग्रन्थो में है। भोले के साथ भंडारी का नाम लेना महान परंपरा के देवता से जुड़ने का संकेत देता है। मनोकामनाओं, इच्छाओं, मुरादों के पूरी होने से बड़ी संख्या में लोग आकर्षित हुए, जिससे दूर-दराज के क्षेत्रो में यहां की लोकपृयता का विस्तार हुआ है। स्थानीय देवी के मंदिर में वृहद परम्पराओं के देवतओं की उपस्थिति यह संकेत देती है कि लघु परम्परा के तत्व वृहद परम्परा के तत्वों से अप्रभावित नहीं हैं। स्थानीय ग्रामीण संस्कृति के लोग अपने परम्परागत विश्वासों, लोकमान्यताओं से स्थानीय देवी के प्रति जो आस्था प्रकट करते हैं, उनकी लोकपृयता जिस तरह से ग्रामीण से नगरों की तरफ हुयी है, इसके आधार पर कहा जा सकता है कि स्थानीय परम्परा के तत्वों के विस्तार की प्रकृया सार्वभौमीकरण की तरफ बढ़ रही है। लोगों में यहां के बारे में बढ़ती हुयी आस्था, जानकारी, मनोकामनाओं के पूरा होने के स्थान, वृहद परम्परा के देवी के समकक्ष इन्हें मानने की प्रवृत्ति इस प्रकृया को बढ़ा रही है।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1- खत्री, देवकीनन्दन,1881, चन्द्रकान्ता सन्तति, लहरी पब्लिकेशन, वाराणसी।
2- वृंदावनदास,बा.(अनुवादक)1941, श्री मार्कण्डेय पुराण, श्यामलाल हीरालाल श्यामकाशी प्रेस, मथुरा।
3- विद्यार्थी, एलपी. 1961, द सेक्रेड काम्पलेक्स ऑफ हिन्दू गया, प्रकाशन एशिया पब्लिषिंग हाउस, बम्बई|
4- झा, माक्खन,1995, द सेक्रेड काम्पलेक्स आफ काठमाण्डू, ज्ञान पब्लिषिंग हाउस, न्यू दिल्ली।
5- रेडफिल्ड, राबर्ट,1956, पीजेन्ट सोसायटी एण्ड कल्चर, युनिवर्सिट आफ सिकागो प्रेस, सिकागो।
6- मैरियट, मैकिम,1956, लिटिल कम्युनिटी इन एन इण्डियाज सिविलाईजेशन इन विलेज इण्डिया, युनिवर्सिटी आफ सिकागो प्रेस, सिकागो।
7- तिवारी, ईति,2008, भारतीय समाज का आधुनिकीकरण, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली।
8- सरकार,डीसी,1965-66, इपिग्राफिका इंडिका, आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इडिया, प्रकाशक, दी मैनेजर आफ पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
9- अग्रवाल, डा0गोपालकृष्ण,2021, ग्रामीण समाजशास्त्र, एस बी पी डी पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
10- जैन,दोषी, 2015, रूरल सोसियोलाजी, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान।
11- जेन, हसन,2019, मलेशिया में धार्मिक मंदिरों को फिर से देखने के लिए बौद्धों की प्रेरणा, यूरोपियन जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट एंड रिसर्च, 4 (4) .
12- क्रिस्टी, अनीता (2016)। पवित्र भूगोल : शिकोकू 88 मंदिर तीर्थयात्रा। स्रोत:साइटलाइन: ए जर्नल ऑफ प्लेस, वॉल्यूम। 12, नंबर 1, पीपी 10-14 द्वारा प्रकाशित: फाउंडेशन फॉर लैंडस्केप स्टडीज स्थिर यूआरएल: https://www.jstor.org/stable/10.2307/24889527
13- पांडे, करुणा,2013, करबरी ग्रांट विलेज में पवित्र परिसर (गोरखा समुदाय के विशेष संदर्भ में) जूनियर एंथ। भारतीय सर्वेक्षण, 61 (2) और 62(1): (479-495), निदेशक भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण 27, जवाहरलाल नेहरू रोड कोलकाता - 700 016, भारत द्वारा प्रकाशित।
14- डोल्ड, पेट्रीसिया, 2004, कामरूप में महाविद्या: हिंदू धर्म में परिवर्तन की गतिशीलता, जर्नल: धार्मिक अध्ययन और धर्मशास्त्र, डीओआई:10.1558/rsth.v2311.89, Issue: Vol 23 No. 1 (2004) INFORMATION FOR CITATION-NO PDF AVAILABLE